→ Date → 16.11.2017
(DAINIK BHASKAR)

योगदा सत्संग आश्रम परिसर में परमहंस योगानंद की पुस्तक गॉड टॉक्स विद अर्जुन-द भागवत गीता के हिंदी अनुवाद ईश्वर-अर्जुन संवाद का विमोचन करते राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू, मुख्यमंत्री रघुवर दास सहित आश्रम के स्वामी और उपस्थित देश-विदेश से पहुंचे योगदा सत्संग सोसाइटी के अनुयायी।

योगदा सत्संग परिसर में परमहंस योगानंद की पुस्तक गॉड टॉक्स विद अर्जुन-द भागवत गीता के हिंदी अनुवाद ईश्वर-अर्जुन संवाद का विमोचन

जहां धर्म का अंत होता है, वहीं से अध्यात्म शुरू : कोविंद

पॉलिटिकल रिपोर्टर | रांची

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा है कि जहां धर्म का अंत होता है, वहीं से अध्यात्म शुरू होता है। स्वामी विवेकानंद और परमहंस योगानंद ने विश्वस्तर पर भारत के अध्यात्म को सम्मानित और लोकप्रिय बनाया। उन्होंने आत्म साक्षात्कार और विश्व प्रेम की भावना पर जोर दिया। राष्ट्रपति कोविंद बुधवार को योगदा सत्संग परिसर में श्रीमद्भगवतगीता पर विस्तृत व्याख्या व परमहंस योगानंद की पुस्तक गॉड टॉक्स विद अर्जुन-द भागवत गीता के हिंदी अनुवाद ईश्वर-अर्जुन संवाद का विमोचन के अवसर पर लोगों को संबोधित कर रहे थे।

देश-विदेश से आए करीब 2000 योगदा भक्तों की सत्संग सभा में उन्होंने कहा कि आत्म साक्षात्कार और विश्व प्रेम की भावना से जुड़े लोगों की यहां पर ये उपस्थिति महत्वपूर्ण है। यहां के वातावरण और प्राकृतिक दृश्य में अनूठा मेल है। जिस वृक्ष के नीचे 100 वर्ष पहले परमहंस बैठते थे, वह अपनी औलौकिकता को लेकर खड़ा है।

मैं योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडिया द्वारा पूरे विश्व में निरंतर योगदान के 100 वर्ष पूरे होने पर इस सोसाइटी और परमहंस योगानंद के विचारों से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को बधाई देता हूं। इन 100 वर्षों में योगदा सत्संग सोसाइटी ने पूरे विश्व में भारत के योग विज्ञान को प्रसारित करने में सराहनीय योगदान दिया है। इस शताब्दी वर्ष में गीता पर परमहंस जी की टीका के हिंदी अनुवाद का प्रकाशन समयानुकूल है और उपयोगी भी। वर्ष 1995 में मूल अंग्रेजी टीका का प्रकाशन हुआ था। अब तक स्पैनिश, जर्मन, इटालियन और पुर्तगाली भाषाओं में अनुवाद उपलब्ध थे। आज इस हिंदी अनुवाद के प्रकाशन द्वारा एक बहुत बड़े पाठक वर्ग के लिए इस पुस्तक में निहित जीवनोपयोगी ज्ञान सुलभ हो गया है। इस अनुवाद के लिए स्वामी नित्यानंद जी प्रशंसा के पात्र हैं।

मैं मानता हूं कि अध्यात्म हमारे देश की आत्मा है, जो पूरे विश्व के लिए भारत की एक महत्वपूर्ण देन है। विश्वस्तर पर भारत के अध्यात्म को सम्मानित और लोकप्रिय बनाने का मार्ग स्वामी विवेकानंद और परमहंस योगानंद ने प्रशस्त किया था। एक रोचक ऐतिहासिक संयोग से वर्ष 1893 में स्वामी विवेकानंद के शिकागो संबोधन ने भारतीय अध्यात्म के बारे में पश्चिम में जागृति की एक नई लहर पैदा की थी और उसी वर्ष गोरखपुर में परमहंस योगानंद का मुकुंद लाल घोष के नाम से अवतरण हुआ था।

मुझे यह जानकारी अभिभूत करती है कि 1918 से 1920 तक रांची के इसी आश्रम को परमहंस योगानंद ने अपनी कर्मस्थली बनायी थी। उसके बाद अगले 32 वर्षों तक वे सेल्फ रीयलाइजेशन फैलोशिप के माध्यम से अमेरिका में लाखों लोगों को क्रियायोग की शिक्षा से लाभान्वित करते रहे। इस दौरान

वर्ष 1935 में जब, वे भारत आए तब भी उन्होंने इस आश्रम को अपनी उपस्थिति से पवित्र किया था। महात्मा गांधी भी वर्ष 1925 में इस आश्रम में आए थे। यहां आना मेरे लिए बहुत खुशी की बात है।

परमहंस योगानंद का संदेश अध्यात्म का संदेश है। यह धर्म से परे सभी धर्मों का सम्मान करने का, विश्व -बंधुत्व का नजरिया है। वे मानते थे कि जिस तरह रोशनी, हवा और पानी सबके लिए है, उसी तरह ऋषि-मुनियों द्वारा विकसित किया गया भारत का योग विज्ञान भी पूरी मानवता के लिए है। गीता में भारत का यही योग शास्त्र श्रीकृष्ण और अर्जुन के संवाद के रूप में समझाया गया है। अपनी टीका में परमहंस योगानंद ने गीता के मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक पक्ष को स्पष्ट करते हुए मार्गदर्शन प्रदान किया है। हर मनुष्य के अंदर चलने वाले युद्ध को उन्होंने गीता का विषय माना है। परमहंस योगानंद के अनुसार, गीता दैनिक जीवन के लिए एक पाठ्य पुस्तक भी है। वे कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को कुरुक्षेत्र की अपनी लड़ाई स्वयं लड़नी है और इसे जीतना भी है। सही क्या है और गलत क्या है, क्या करें और क्या न करें, यह अंतरद्वंद्व सबको परेशान करता है। ऐसे दोराहों पर निर्णय लेने में विद्वता की नहीं बल्कि विवेक की आवश्यकता होती है। सही और गलत के बीच चुनाव करने का यह विवेक गीता में मिलता है।

उन्होंने कहा कि गीता पर अपनी टीका को परमहंस योगानंद आत्म -साक्षात्कार का राजयोग विज्ञान कहते हैं। वे आत्म-साक्षात्कार को गीता का उद्देश्य मानते हैं और राजयोग, इस उद्देश्य को प्राप्त करने की पद्धति है। यहां बैठे अधिकांश लोग योग की विभिन्न पद्धतियों से परिचित हैं। स्वामी विवेकानंद और परमहंस योगानंद ने राजयोग पर विशेष जोर दिया था। राजयोग की वैज्ञानिकता के कारण पश्चिम के लोगों पर इसका अधिक प्रभाव पड़ा। आज की युवा पीढ़ी के लिए भी राजयोग अधिक उपयुक्त लगता है।

मेरा यह मानना है कि जो व्यक्ति गीता को अपने आचरण में ढालेगा, वह झंझावात में भी स्थिर रहेगा, शांत रहेगा और सक्रिय रहेगा। प्रायः लोग सफलता-असफलता और जय-पराजय के चश्मे से सब कुछ देखते हैं। इस संदर्भ में गीता का कालजयी संदेश उसके अंतिम श्लोक में देखा जा सकता है :

यत्र योगेश्वरो कृष्णः, यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीः विजयो भूतिः, ध्रुवा नीतिः मतिः मम।

इस श्लोक का भाव है कि जहां योगेश्वर कृष्ण और धनुर्धर अर्जुन हैं, वहीं विजय भी सुनिश्चित है। इसका अर्थ यह है कि योग और दक्षता का समन्वय तथा अध्यात्म व कौशल का समन्वय विजय को सुनिश्चित करता है। गीता का अमर और जीवंत संदेश परमहंस योगानंद की टीका के माध्यम से बहुत लोगों तक पहुंचता है।

मेरा मानना है कि मेटरलिज्म (भौतिकवाद) और कंपीटिशन (प्रतियोगिता) से घिरी आज की युवा पीढ़ी पर भी परमहंस योगानंद का गहरा प्रभाव है। कड़े संघर्ष के बीच विश्वस्तरीय सफलता और समृद्धि हासिल करने वाले नवयुवक उनकी पुस्तक ऑटोग्राफी ऑफ ए योगा को अपनी सफलता का श्रेय देते हैं। यह पुस्तक उन्हें जीवन में आगे बढ़ने का सही रास्ता दिखाती है। सत्तर साल पहले प्रकाशित और लगभग 45 भाषाओं में अनुवादित यह पुस्तक, जिसे दुनिया के लगभग 90 फीसदी लोग अपनी भाषा में पढ़ सकते हैं, आज भी उतनी ही लोकप्रिय है।

मैं योगदा सत्संग के आश्रमों और ध्यान-केंद्रों द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, प्राकृतिक आपदाओं से आहत लोगों की सहायता, अनाथ बच्चों के लालन-पालन और कुष्ठ रोगियों की सेवा आदि क्षेत्रों में योगदान की सराहना करता हूं। मैं आशा करता हूं कि हिंदी में उपलब्ध परमहंस योगानंद की गीता की टीका से लाखों करोड़ों लोग अपने जीवन को बेहतर बनाने का रास्ता जान पाएंगे। अपने आप को समझ पाएंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि योगदा सत्संग सोसाइटी अध्यात्म का प्रसार और मानवता की सेवा करते हुए परमहंस योगानंद के विश्व कल्याण के अभियान को इसी प्रकार आगे बढ़ाती रहेगी।

योग से आत्म साक्षात्कार संभव है : स्वामी स्मरानंद

राष्ट्रपति का स्वागत करते हुए योगदा आश्रम के महासचिव स्वामी स्मरानंद गिरि ने कहा कि परमहंस योगानंद ने अपनी जीवन शैली व शिक्षा द्वारा लोगों को संदेश दिया कि योग के माध्यम से व्यक्ति के आंतरिक एवं बाह्य जीवन में परिवर्तन आता है। उससे उसे आनंद, संतोष एवं सुरक्षा प्राप्त होता है। इसी के लिए आज मानव बेचैन है। उचित कार्य, अच्छा व्यवहार द्वारा बाह्य जीवन भी सुंदर होता है। उन्होंने कहा कि योग के माध्यम से आत्म साक्षात्कार संभव है। अपने वैज्ञानिक पद्धति के कारण पूरे विश्व में यह स्वीकारा गया है।

आध्यात्मिक सोच लोगों को जोड़ता है, तोड़ता नहीं : स्वामी चिदानंद

योगदा सत्संग सोसायटी व सेल्फ रीयलाइजेशन के अध्यक्ष स्वामी चिदानंद ने कहा कि आध्यात्मिक सोच लोगों को जोड़ता है, तोड़ता नहीं है। उन्होंने कहा कि भले ही मैं अमेरिका में पैदा हुआ, परंतु मेरी आत्मा भारतीय है। जिस प्रकार हवा, रोशनी, जल मनुष्य के लिए आवश्यक है, उसी प्रकार योग भी अपरिहार्य है। सनातन धर्म के तत्वों को भारत के ऋषियों- सद्गुरुओं के चिंतन तत्व को पूरे विश्व में परमहंस योगानंद ने फैलाने का कार्य किया। अपने गुरु स्वामी युक्तेश्वर जी के निर्देश पर उन्होंने गीता की व्याख्या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से की है। पश्चिम के देशों में लोग उन्हें फादर ऑफ योगा के रूप में जानते हैं। उन्होंने कहा कि गीता का अनुवाद कई लोगों ने किया है, परंतु ईश्वर अर्जुन संवाद : गीता उनसे अलग है। ईश्वर अर्जुन संवाद में जीवन के कई पहलुओं को विस्तार से समझाया गया है। भारत ने दुनिया को अध्यात्म और योग दिया।

राष्ट्रपति ने किया योगदा सत्संग परिसर का भ्रमण

योगदा सत्संग परिसर पहुंचने पर राष्ट्रपति ने पूरे परिसर का परिभ्रमण किया। साथ में राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू, मुख्यमंत्री रघुवर दास, योगदा सत्संग सोसाइटी के प्रेसिडेंट स्वामी चिदानंद, महासचिव स्मरानंद गिरि और स्वामी विश्वानंद गिरि भी थे।

राष्ट्रपति को स्मृति चिह्नभेंट किया

स्वामी चिदानंद, स्वामी स्मरानंद और स्वामी विश्वानंद ने पुष्पगुच्छ और शॉल देकर राष्ट्रपति, राज्यपाल और मुख्यमंत्री का स्वागत किया। स्वामी चिदानंद ने राष्ट्रपति को स्मृति चिह्न के रूप में योगेश्वर श्रीकृष्ण का फ्रेमयुक्त फोटो दिया। स्वामी ईश्वरानंद ने स्वागत भाषण के साथ साथ मंच संचालन करते हुए धन्यवाद ज्ञापन किया।

ये भी थे उपस्थित : समारोह में देश- विदेश से आए भक्तों के अलावा केंद्रीय राज्यमंत्री सुदर्शन भगत, राज्य के खाद्य आपूर्ति मंत्री सरयू राय, नगर विकास मंत्री सीपी सिंह, कृषि मंत्री रणधीर सिंह, पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय, पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा, विकास आयुक्त अमित खरे, प्रधान सचिव कार्मिक निधि खरे, प्रधान सचिव गृह एसकेजी रहाटे भी उपस्थित थे।